मुद्रांक शुल्क
मुद्रांक शुल्क
दिनांक,

कोक

तीसरा भाग

मुरारामधनदूसरे फारसी की किताबसे हिंदीभाषामें उल्थाकिया

मथुरा

संवत १९२८

आपकी देहरक्षा

ओंनमोलाहकालाढाजहांडा
किकंडीहमारापेटहप्रेोकंची
वहताहमारा पिडका श्रीहनुवन
ववाला योमंत्रकोपढिकेकहे
होकुष्ठचताया कीदेहमें न
होंउपजेसत्तसही ॥+

ववासेरकोमंत्र

उमतीउमता चलचलस्वाहा
लसचमें तीनगांठदेकर
मंत्रपढके पांवकेअंगूठेमेंबांधे

ऋाडादस रोगका

परबन ऊपर परबन परबन ऊ
पर फटिक शिला फटिक शिल
पै श्रंजनी जिन नाया हनुमंत नेह
लाटेहला कंारवकी कखलाई पी
छेकी श्रीठ कांन्हकी कनफेर रा
नकी भद कंठकी कठमाला घुट
नका डमरू डाढ़का दृढ शूल पे
टकी नापनिल्ली फीया इननों को
दूर करे भस्मन नानर नुके मान
श्रंजनी का दूध पिया होय हराम

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो
मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नामादेश
गुरु का ॥ वि० ॥ सानध्यानि श्चर
नुमान का पूजन धूप दीपादिने
ध्यान करके १०८ दिन प्रतिजाप करे
मश्चर्य से रहे फिर होली दिवा
ग्रहण में १०८ मंत्र जपे का खला
हीठ कन फोड़ भद्रकंठ माला सह
लकोरव से फोड़े डहरु को श्रा
सन पानी छुरी से गोड़े नुमा
का प्रसार बरदा दियाकरै ॥

तापतिल्लीमंत्र

ओंनमोहुलासपरवतजहामु
हसुरहगायकोपटमेंवच्छा
वच्छकेपेटमेंतिल्लीस्वादवा।
तिल्लीकेटसरकंडावेडफोयाक
टहराफरो२अंकाकारकेछुरीके
फलगासोंछांडदीजेसरकंडाव
डावेडछुरीकीलाहकटे

नेत्रकेदर्दमंत्र

ओंनमोश्रीरामकीघतीलाछम
नकेवारणाश्रांकदर्दकेलछम

कवांर की आन मेरी भक्ति गुरु
की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा
सत्य नाम आदेश गुरु का
२१ दिन में मंत्र सिद्ध को धूपा
दीप नईवद्यादिक करके लक्ष
मन्त्र जी का पुजन करके प्रति।
दिन १०८ जपे॥ डाट के दर्द में
ओंनमो आदेश गुरु को वन में
व्याई अंजनी जिन जयाहनु
मन्त्र की डान को डाम गाडाये३
मम गुरु बीष्ठ की मेरी भक्ति फुरो मं

ईश्वरोबाचासत्यनामआदेशगु
रुको।सिद्धकरनीमकीडालीसे
फोड़े॥ गर्भरक्षाकामंत्र
ओंनमोपवनपूतकायाकारव
कीलागर्भनाछोड़ठांवजडकील
जलवाईकीलूकीलूभगकेघार
मेराकीलानाफाड़ाफोड़ेइसगर्भकी
रक्षाहनुमानकरेमेरीभक्तिगुरु
कीशक्तिफुरेमंत्रईश्वरोबाचास
त्यनामादेशगुरुका॥ बिधी॥
कारिकंन्याकाकानास्नानस्नान

गांठिदेके गूगल घीकीधूपदे २
मंत्रपढ़ गंडास्त्रीकी कटिसों बांधे
नौमासपीछे खोले ॥ मंत्रगर्भर
क्षाको ॥ ॐनमो आदेशगुरुको
आकाशबोयोकपासगोराका
नेछःमासब्रह्मांबांटनागोईश्वर
तीनाबांधमासएकबांधूमासदो
बांधूमासतीनबांधूमासचारबां
धूमासपांचबांधूमासछःबांधू
मास७बांधूमास८बांधूमास९
फलानीके पेड़नबूंदभोजनचीर

रक्षाकरे हवू वीरमेरा वाधावन्द
छुटेतोईश्वरोमहादेवगुरु गो
रखनाथा जतीहनुमंतवीरला
जशावदसांचापिंडकाचामही
गुरुकीशक्तिफुरोमंत्रईश्वरोवा
चा विधीधूपदीपनईघ करके
२१ दिन प्रति २२१ जापकरेफि
रोगी कोडोराबनादेकन्याकाना
मलरवि बार १गाठदेएकराका
टपै ३ तीनमंत्रपढेतो महीनेपी
छे बोलेहनुमानकोरेटबोल

तेज की पीडा को मंत्र

सातों दिन सात भाई सातों मिल
के आवें वाई दुहाई माकी है
इन आवन पीडा करे धोवी की
नीद चमार के चुल्हे पडे मेरी भ
ती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो
वाचा सत्य नाम आदेश गुरु
विधि विडा पान २१ लोंग मि
दूर धूप दीपने वघकरके २१
दिनमें सिद्ध करे प्रातदिन
१०८ जपके आखोंपे २१ वार पढ़े

आगमहोयहोलीदिवाली१०८जेपे
जानवाडमरूपसलीवाय
सत्यनामादिश्रीगुरूकाउंकंवरवारी
कंवरवारा कहांगया सवालाखय
रबनोंगया सवालाखपरबनोंजा
यकहाकरेगासवाभारकीइला
करेगासवाभारकीइलाकरकहा
करेगाहनुमंनवीरनबचंद्रहांस
खड्गघडेगानबचंद्रहांसखड्गघड़
कहांकरेगाजानवाडेमरूपसली
बायकारखारीसमुद्रनारवेगाज

गनगुरुकीशक्तिमेरीभक्तिफु
रोमंत्रईश्वरोवाचा। विधी। प्रथम
विधिपूर्वकसिद्धकरैफिरनिली
केनेलसिन्दूरसोंकोटे ॥

पीलियाकोमंत्र

ॐनमोआदेशगुरुकोगणचंद्र
सरसांधालछमनसांधाबानका
लापीलाराणापीलाधोराणापीला
पीलापीलाचोरोंकुडजोरामचंद्र
जीयांकीआनमेरीभक्तिगुरुकी
फुरोमंत्रईश्वरोवाचा। विधि। र्क्त

सर्इसो पीतलकी कटोरीमें पा
नीभरे के गाड़दीजे होलीदिवा
लीमहरणामें१०८मंत्रजपेप्रम
२१दिनमें सिद्ध होवे१०८जा
प करे ।।

ठिस्लीकामंत्र

ओंसें ह्रीं सुंडकी तपाति
तपावि सम्हा नीनडालीसे
फाडे अच्छा होय ।।

५ ।। ५ ।।

सभामोहनीमंत्र

कालीमुरवधोंकरोंसलामेमीओं
खोंमेंसुरमावसे जोदेखेसोपाठं
पेढेदसबईगोमलआजमदस्त
गीरकीविधी ।सवालाखवगेहूंपे
१२००मंत्रपढके आटाकरेविधी
खांडमिलालडूवाबनावेफिरएसे
सलआजमदस्तगीरकीनियाज़
देआपहोयवायजबकिसीस
भामेंजायसुरमेपर७पढे मंत्र
लगाजाय सबसभावस्यहोय

अथ सभामोहनीसिंदूर

हथेलीनोहनुमंनबसैभैरोंबसै
कपालनाहरसिंहकी मोहनीमो
होसबसंसार। मोहनरेमोहनना
वीरसबबीरनमेंतेरासीरसब
कीदृष्टिबांधिदे मोहिनेलसिंदूर
चढ़ाऊंनोहिनेलसिंदूरकहांतेआ
याकैलाशपर्वतसेआयाकौनला
याअंजनीकाहनुमंनगौरीका
गेशकालाभाषालोनलानीनोबसै
कपालविंदानेलसिंदूरकादुश्मनग

यापतालदुहाईकामिथ्यासिंदूर की
हमेणेवसीतलहोजायमेरीभक्ति
गुरुकीशक्तिफुरोमंत्रईश्वरोवाचा
सत्यनामादेशगुरुका ॥ विधी ॥
सातशनिवार दीपकेतेल कालोढ
नरवेवमिष्टानभोगधरे १०१ मंत्र
फूलपानकरके पूजाकरे सिद्ध
होजायतापीछेजहांजायसिंदूर
सातबार मंत्र पढ़ माथेपेलगा
जाहोयगुस्सा शेर डरनेको
दूनोदरवाजेसीतलहोजाय

जिससभामेंजाय वहौंसववड़
आदरभावकों ॥

वसीकरनगुटका

ॐनमोआदेशगुरुकोंधवांतधा
रदेकेपल्मातेरीभक्तितेरसरात
कोटूटातारणोसाटूटामेरूवावा
कामनगारा गुड़मंत्रपढउस्को
देघरचक्रवाहचक्रफिरदेवेह
मारामुखजीवतसेवेजीवकों
मुएसेवेमसानहमसिंआकुल।
व्याकुलजतीहनुकीआनहमें

छाडश्रोरके पास जाय पेडफाडि
तुरतमे सत्यनाम श्रादेशगुरु
विधी ७ शनिचर तक दिन २१
जपे श्रपनेस्थानमेंभोगसरावक
लेजीलामसी मिठ्ठो जाय तव
गुड़ये २१ मंत्र पठजिमेदेवेसो।
हो वसीकरत श्रमललोंग
सत्यनामश्रादेशगुरुकका लोंग
मेराभाईइत्ही लोगोंनशक्ति
लाइपहलीगांतिमाती दूजा
जोवनमाता तीजा श्रंगमडोडे

२०

चारों लोग जो मेरी खाय फ़लाने के
पास से फ़लाने के पास आनाये मेरी
भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्व
रो वाचा ॥ विधि ॥ यामंत्र को पूर्ण वि
धि सिद्ध करके एक २ लोंग पे सात २
मंत्र पढ़ के जिस स्त्री को खवावे वश्य
होय ॥ वसीकरण सुपारी ॥
खरी सुपारी टामन गारी राजा परजा
खरी पियारी मंत्र पढ़े किलाऊं नोड़
हिया कलेजा लावे नोड़ जीवन चोट
पगयली मुए सेवमसानया शब्द की

२१

मारीनलावेनौजनीहनुमंतकीर
आनशब्दसांचापिंडकाचामेरीभ
क्तिगुरुकीशक्तिफुरोमंत्रईश्वरो०
॥बिधी॥सूर्यग्रहणमें७सुपारीमं
त्रकेजिसस्त्रीकोखुलावेवशगिरो

वशीकरनपानका

ॐकामरुदेशकमत्तोदेवीजरुं
बैठइसमायतजोगीदियेचारपान
एकहिपानजोराचीमाटीदूजेपान
जोबिरहसंजोगीतीजेपानजोभृंगम
राइचोथेपानदोऊकरजोइचारेपान

जोमेरेवायमेरेपासमेंनजाय
ठाड़ेसुखनबैठेसुखफिर२देखे
मेरामुखकामरूकामव्याकाम्रो
हाफेरेंइनबचातोंकीसिद्धबठे
ठोंटःटःटःठःटःटःविधिरवि।
कोएक२पानसोंत२वारपढेपा
छचारपानबीरामेंखवावेस्त्रीव
श्यहो२१दिनमेंमत्रसिद्धहे
जो चाहिये

वसीकरनश्रमलफूल
कामरूदेशकामिष्यादितहांवसे

इसमाईलजोगीइसमाइलने
लगाईवाडीफुलचुनेलोनाच
मारीफूलराताफूलमाताफूलहां
सातहांवसे चम्यकांपेड चम्येके
पेडमेंरहे कालभैरोंभूतपली
तमेरेमसानयग्रावे किस्के।
कामभेंग्रावेंटोनाटामनके।
कामभेजूकालभंकोलावेमु
सकेंबांधविठीहोतोवेगालावमु
तीहोतोउठालाव वहसोवराज
केमहलोंपर जोकेमहलोंमुझ

सुहागी फलानी रामा फूल दूंउ
सीके हाथ वह उठ लागे मेरे नाथ
हमको छोड़ पर घर जाय छाती
फाट बंही मरजाय मेरी भक्ति गुरु
की शक्ति पुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
वाचा चूके उमा हस्के लोना चमा
री मरे जोगी के कुंड मेंपड़े वाचा।
छोड़ कुवाचा जाय नो कुंभी नरक
में पड़ जाय॥ दिखो॥ नोनो रतन
[illegible]

होयफिर रविवारको चंपाकेफूल
पर २१बार मंत्रपढ़ जिसेसुंघावे
वशीहोय ॥ ॐ ब्रुरकीमंत्र ॐ ॥
मोहनीमोहनीकहाँचलीकहां
चलीबरा खुदाईकामचलीऔरं
देखनलेबलेमेरे देखेपैरोंपड़छू म
नकावाचागुरुकासबकसबसं
चासत्तनामादेशा गुरुका ॥
विधी ॥ रविवारकोसकारेगुड़का

सवत पावे दिन एकाहे रात्र को
इलायची सुथरी लौंग बीडीपा
नाक पेड़ी घी की दीपक ले के।
चोकादे के तीन को दीपक के आ
गे गुगल खेवे बीड़ा पड़ा भोग
धरे इलायची लौंग सुपारीपर
१०१८ मंत्र पढ़े पुजा करके मी
ठाकापड़ा बीड़ा आप खावे
फिर एटी खाय लौंग सुपारी
इलायची कोपीसकर पास रावे
जिस स्त्री कोवस करना होय उस

केवांयेपावकेनीचेसेरेतमीटी
उठाकेचाचूरनमेंमिलाकरलो
केलगावेवश्यहो ॥

काजलवसीकरत

पदमनीअंजनमरानामइस
नगरीमेंबैठकेमोहूसगगागांव
एजामोहूफरसवेठापचंमो।
पनघटकीपनहारी-हूंइस
नगरीमेंपैसेछतीसपवनामो
जाकमा२करताआवेतोहता
वीरवावापगकेअंगूठाधरे२लो

वेमरीभक्तिगुरुकीयाकिफुरामंत्र
ईश्वरोवाचासत्यनामश्रीरेणुग
रुका॥बिधी॥सानशनीचररवि
बारनाहरसिंहकीपूजाकरदीप
कचंदनकुंकुमअगस्तकेपुष्पगु
गलनैवद्यपानसुपारीसेप्रनिदि
न१०८मंत्रजपेपानलोंगसुपारी
शीरनीघनमेंमिलाकेहोमकरपृ
थ्वीमेंसोवएकबारखायस्त्रीसंग्र
गसंगनहींकरमंत्रसिद्धहोजाय
जबश्रोंगाकीजड़नांदनबनकी

२६

कड़ कीबानीबनाकेकाजलपाड़े
कानलपर मानबार मंत्रपढ़े ओं
नमोनलगावेजाकोदेखेसोबसीकरे

बसीकरनमंत्र

बिसमिल्लाअरहमानिरहीमइन्ना
एलाएनेसइलल्लिलाहओनेमि
लसयामहम्मदरसूलिल्लाहफ
लानाहमाराकहनाकेलाइलला
हइललिल्लाहमहम्मदरसूलि
ल्लाह। बिधी॥२१जाप२४दिनस
कर लोबानचरणीफूलघृतबो

वसीकरन सुरमा

विसमिल्लाहहिरहमारहीम जलदोखडेथलदखि — डे सिहासंनवेठाराजाडेरसीतल पाटीवैठीरानीडे जोनमानेइ समरमेंकीआनउसपखड़े छज दहइमानकेवाणा विधि ॥ दिन२१ प्रात दिन१०८ जाप ठाणी लोवान मिठाईखुशवो आगे धरे सिरु हो ॥

उच्चाटनमंत्र

ओंह्रीमोतेश्वरीगंडालीश्रमु
कस्याश्रमुकादः दःपचपचम
थमथउच्चाटयः२हूंफट्स्वा
हा विधि तलकीरवल१०८
वार जपहोम करे

उच्चाटनमंत्र

ओंनमोममसानवीरगाउच्चाट
उच्चाटनहो कुरु कुरुस्वाहा
विधिगृहतमेंममसानहोड़ओ
रकोईलालाका सिरु करो

३२

जिसके घरमें गाड़े उसका उच्चाट
नहोय अथवा शनीचर ऐतवार
कोदोपहरीके समय श्मसान
मेंजाकर हाड़ लावेवाकीकील
बनाके मंत्रसेसिद्धकरके गाड़े ×

मारणकोमंत्र

ओंनमोहाय्य फावड़ीकांधेमराभै
रोंवीर मसानेखड़ा लोहकीधनी
वज्रका बाणवेग नामरेनो दे
वीकालकाकीआन गुरुकी
शक्तिमेरीभक्तिफुरोमंत्रईश्वरो

वाचासत्यनामआदेसगुरुका ॥
विधि दिवालीकीरातचौकादेके
दीपकवोरे गूगलकी धूपदेदीपक
कीलोइपरउड़दमंत्रपढ़चौकोंमेंसे
लना जायफिरकालेकुत्तेकालहू
उड़दनकेलगावेधूपदेकेउड़दकी
रावमें मिलावेरावउड़दवेरी
केमारे ॥

मारणमंत्र

ओंह्रींअमुकस्याहनहनस्वाहा
विधि कड़वातेलमुक्तफलकने
होमकरे दसहजार

वैरीनाशंदेकीमंत्र

ओंनमो आदेश गुरुको बांधू मव
रबांधू तारा बांधू रक्त विंदू का धारा
ऊपर बांधे कामसत तले बंधे हनु
मन्त पाचौं पण्डा मारद ईंफ़ लनेकी
काया बंधे हनुमन्त गुरुकी शक्ति
मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा स
त्यनाम आदेश गुरुका विधि ॥
सातसनीचा या २९ दिन धूपदीप
देकरके हनुमान की पूजा करे प्रीत
दिन १०८ मंत्र जपे फिर तीलों तागो
प्रति वार को मत्राके सात गाँठदे
७ मंत्र पढ़े जा की रवाट कापाया नी
चे गाढ़े सो नामर्द होय उरवाड़े ॥

रोग जाये ॥

बेरी के बिगाड़ने का मंत्र

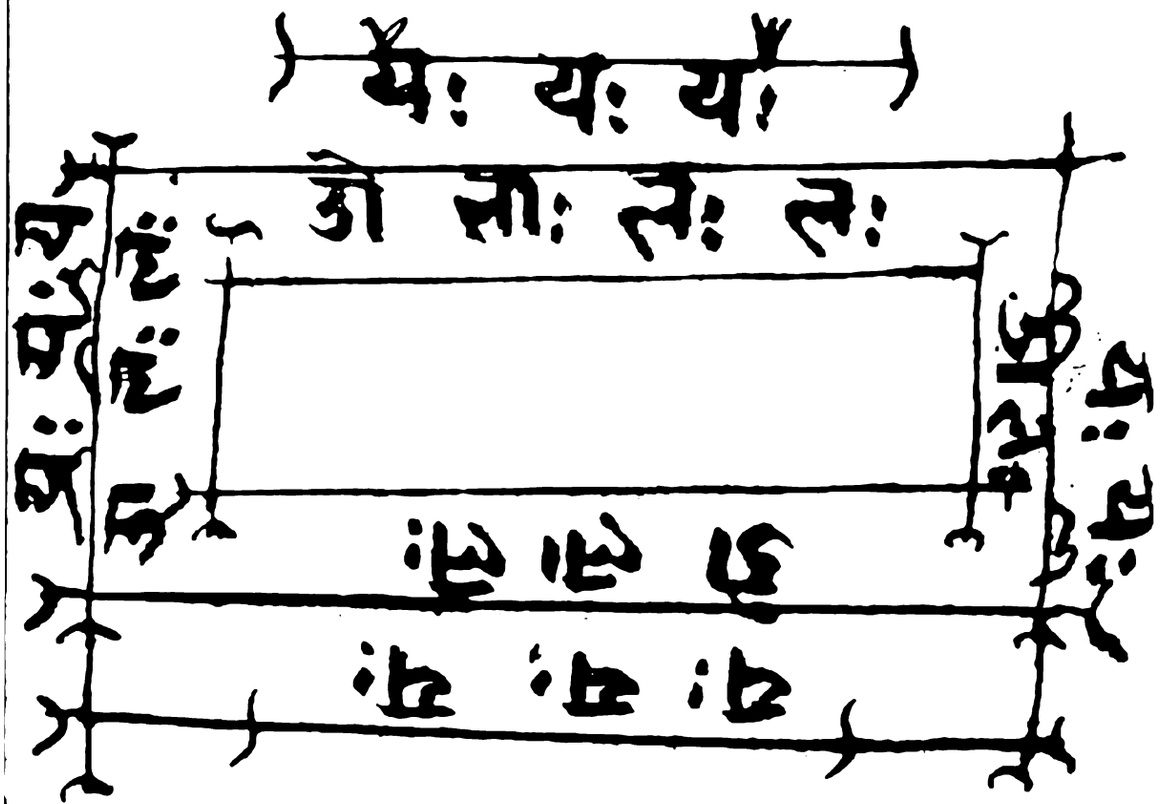

विधि रवीवार को मसान के कोइला
और हर नाल साकोरा ढेकरी मंचलि
व मसान में गाड़े बीच के गोल घर में
बेरी का नाम लिंव और उस पीमा

वेरी ऊरे करवेकोमंत्र

ॐनमोयावलीयावलीउस्काचस
मकुलफउसकावाजकुलफडस
मनकीजोरहमकोशार ॥

विधि ॥ २१ दिनहनु
मानकीपूजाकेमंगलमे१०८जा
पधूपदीपनईवेद्यकरकेपूजजन
केरफिरमगलकीमंगाल१०८ जाप
करवतराखेजहांबेरीवेटालेय
तेकी३ या७मंत्रपढनेकेंकेतर्फउ
सकी ॥ चौरीकढवाको
मंत्र ॥ ॐहमुहजलजलालपकड
जोटीधरपछाड़मेजकुढाल्यांव

मुद्दयाकहारयाकहा विधि ॥
प्रातीचार २१ दिनप्रीतएकहजार
जापदीपकमेंरवडीवतीमेलजघ
परवेववतासा सरिनी मोगधेसि
६ करले जवकिसी की चोरीनिका
से तो वहस्यतिवारकोदरयावके
किनोरवेठकेपूर्व विधिपूजनकरे
१०८मंत्र जपेसातदिनतककरे
चौरजावजहोमालरखवाहोयसो
जानाजाय ॥

मंत्र

ओंसतरासंपीरचोंसठेसेजेमानी ।
वावतसेवीरवहलासेभरींतासे

सेतंत्र चोदासे मंत्र अठारसेपवत
सतरसे पहाड़े तोसोन हीनिन्नावे
से नाले हनुमन्त जतीरक्वालाका
सी की कटोरी अंगुल४ चोडी कहां
वारकदांसो चलाई गरवीपरवत
सोंचलाई अठारभार वनस्यानी व
ले लोना चमारी फुले मंत्र कहां २ ।
चोर के जाय कहां २ लावे चोरकों ।
लावे चकार को लावे गाडो धनजा
वनावे चाल २ रे हनुमन्त वीर जहा
सो चलजहां हैरदें चल तोगन्गा
जमुना उलटी चले शब्द साचापि
इकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा स

त्यनाम आदेश गुरुको
विधि कांसी की कटोरी अगुल४
चौडी पैस तीनभर की गडावेदि
वा लीकीरातको फिरउस काप
जन करे याहोमंत्रसे उडद पंदे।
पूजाकरकेकटोरीमें चोक दे धीसे
उडद के देनेकटोरी चले माल चो
री काजहां होय तहांजाय मंत्र
पठा करे धूप दीप कियाकरे सि
द्ध ही दिन१९१ ले प्रीत दिन१००
मंत्र जपे दिनमें सिद्ध करे नौमी
तदिन १०८० जपे॥

चोरकोमंत्र

ओंनमोताहिरसिंहवीरजंजंतूचालु
पोतचालेपानीचालेचोरकाचितचा
चोरमुखलाहूचालेकायाथंवेमाया
मायायेराकरेवीरपाथाथकीपूजापार्व
टलेगोरखनाथकीआज्ञामेटतातथ
चोरासासिंहकीआज्ञा ॥ विधि
१०८वारचांवलमंत्रजेकेटोरादुध
मेंचावलमंत्रकेछोडकटोरीचा
वलचोरकेमाथेजायचोरीनिकसे
सेही ॥

चोरीकाढनेकीविधि

सुपेदमुरगाजिसकेसिरपाटोगहो
लावेमूतसरकालिखवाकेमुरगा

के गलेमें बांधेकेटाकराके तीचेला
वे टोकरापेसबलोगहाथलगावें।
चोरहाथलगतेहीमुखावोलेगा ॥

प्रेतवसकरवांकोमंत्र

ओंसरीबंबंभूते श्वरीममवसीकुरु
कुरुस्वाहा ॥ विधि ॥
मूलनक्षत्रमेंवबूलकेनीचे जाके
तीनदिनजपे प्रीत १०८ प्रेतप्रगा
होय मागामांगकहेनवबचनले
जोमनमेंविचारीहोतेसीकरे ॥

पपीकेवसकरवामंत्र

ओं ह्रीं कनकपपीस्वाहा विधि
पीपरकेपेडकेनीचेशनिवारसेश्रा

दिव लों जापको प्रीतिदिन एक
हजार औरप्रोतदिन१०८आहूती
शुरावमेंदेनाकवेंदिन १०००
जाप के दिनव मेंब्रह्मचर्म से रहे
भोजनकुधरेक वारको ॥

डाकिनीशाकिनीको

मंत्र

ओंनमोहनुमानजी आयाकाई
२ लायाडाकिनीशाकिनी आ
नि कुरु२ साद्या विधि ॥
उलटीचाकीकापिसासतनजा।
शनिचवारको योगी कीमा मा उर
का पुतलाव नवेनावद जा पुतला

लावनके कपड़े का बनावे और
तेल तिलोमें गोगीये ७ बार उतारके
वा को जलावे सिरकीओरसे २ उड़द
मंच के जलतेपे मारता जाय सवापा
उड़द मंगारवे फिर सतनजेके पुत
लाको डाकन समझके एक थालमें
रखे पानी भरदे जिसमे डाकनभा
गन जाये फिर थालके पुतलापे
जलतेहुए पुतलेका तेल टपकता
रहे और तेलडाकनीपर मुखदाले
जोहीं आगलगेगी तुरन्त हाज़िर होगी ॥

ओ नमो आदेश गुरु को हनुमंत
वीर बजरंगी धारडा किनी शक्ति
नी प्रत टोक २ मार न हीं मोरे सोन
रजन निराकार की दुहाई मेरी भ
क्ती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो
बाचा: बिधि प्रथम पुर्वरीती सेमि
धकें शनि वार में २१ दिन तक
पीछे जब किसीके आसेव कारव।
लल होय नीरक कंकरी चीरा हे
की या उडद लावे मंत्र पढ के मा
रे आसेव उतरे ॥

आसेव भूत प्रीत
उतरने का मंत्र

ओनमोआदेश गुरु को हनूमंत
बीर बजंगी नाहर सिंह तारीका
जाया याद करते आया ५ पान
का बीडा मधुकीधार चाल २ नाह
रसिंह वीर कडान लगाई इतनी
वार नाहरसिंह वीर तेरा किया फल
सघट पिंड बांध हमारा हाथ दिया
मारना का हाथ बांधे बोल ताकी
जीव बांधे गांफ ताकि न बांधे बांध
पकड लटा पछाड़े कस कुकडी
उतरता दि सू मधकी धार दुनादूज
वउतर जो खेल जोधार मधार ह
हमारा उतारा उतारा जो और का उ

तेरतोनाहरसिंहचडाल शब्दस
वाफूरो मंत्र इश्योबाचा।।

बिधि

चणा वणवर मुरगाकी के मरगज
लमें मिलाय गोलकरे दाम मि
लाके पूजन करे समय आगधर
दिया करे पांचपान का वीडा सु
पारी खोपरा लोग भोगधरे दिन
२१ जपे सिद्ध हो ॥

मंत्र

बिस्मल्लाहरहमानिरहीम नाई
या सिलाचलानी लारप चलाते
ए तीजी का आसवार चल कौतर

चलदा जी चला गाजी चाल ढाला
वजन्ता चला भेरी वाजती चली त
खत मिला चला तरव तमूसा।
पंगम वा का कहां को चली गा
समान को चली वरा खुदाई के
काम को चली कौन कौन मिपर
चली एक लाख आसी हज़ार ल
चला शाकर चली काली किलकि
चली रुमनगर सों रूमकादिवी
चली जंगली दादा आदम केघा
व घाले हक़ सिलार सिलार इला
ल इललाह महममाद रसूलस्र
लाह मंत्र मिद्ध हो ॥

किया कराया उतार
नेका मंत्र

ओंनमो आदेश ५ गुरु को अपरक
विकट मषबभ पनि प्रल्हाद गारवे
पाताल गारवे पाव देवी गारवे काल्का
गारवे महादेवी भूत प्रेत डाकिनी शा
किनी शा किनी तेजरी सांरु को सवे
को किया कराया पिंड पीर पंडि इस
पंडि की रक्षा करे शब्द सांचो

कंडि तगरा मंत्र

ओंनमो आदेश गुरुको जा दिन तगर
ने चाली गणी सहस कोटि लस च्यार
वीट काली काचली सवा एक उनह

ए मन्त्र माहि घर को प्रजाने बहुत
मन की दृढ मोरे गोल में आवे तो लंका
सि कोट समुद्र सी खाई जे काडा नग
रं रहे तो हनुमन्त वीर की दुहाई श
ब्द साचा फुरु मंत्र

विधि

तिलक लिपर ५० मंत्र पढि काडिने
पेनाख जे दिन ७ तथा २१ काडिने गं
जाय ॥

कोका पाडिने लिखवाहै

बल और वार्य के बढाने की सेंकडों
औषधरसादिक हैं परन्तु इधके स
मान कोई औषध नही है इस लिये

मिथुन क्रियापर है जो मनुष्य दुधपी
वे वीर्य बलहीन नहो वीर्य बढे दुसरा
दया तिली का तेल सरीर पे मलने बल
वान रहता है ॥

बल वीर्य बढाने की औषद

गोंद ढाक का ताल मखाने बीज बंद स
मन्दर मोरव मुसली न पेद गोखरू तज
ये सब औषद बराबर खांड मिला प्रात
काल दूध के साथ ६ मासे खाये ॥

विधि २

कबाब चीनी लोंग अकरकरा सोंठ
पदखालिस इसन्द जलाने काये
सब बराबर पुराना गुड़ २ ले गोली बां

घ ७ दिन खाये १० रत्ती श्रीर सर्सका वी
ज ५ मासि २१ दिन खाये मरीर मेंबलहो
श्रीर धनिया पीसके बराबर की खांड घी
मिलाके ७ दिन पैसाभर खाये बलवी
जबेंद ॥

श्रीर स्वसरवस के दाने भूने चनेवां
ड मांऊ सबेरे खाये बुहत फ़ायदेकोयि
श्रौषद है ॥ श्रौर जावंत्री जायफ़
ल इलायची पुजाती श्रफीम जाडि
के दिनोमे खाये १वरस तक फाइदः
करे ॥ मश्रजून काम किलोल ॥
श्रगर २५ मोचरस २५ दोजो मुसली
२५ मोंफली २५ लिसोडे २५ कोंच

बीज २५ बीजबन्द २५ तालमखाना
२५ कवाबचीनी २५ मस्तगी मुलहटी
२५ खांड १।२२ अवरख कुरतामारे ६
सफ़ेदाना मस्तगीमिलासबको खायेव
लबीजबटे वनधेजकरे ।।
माजूनबटेमेजवानकरे चोवचीनी
१= दालचीनी कबाबलोंग कालीमिरच
मूमीमस्तगी सालबजावत्रीनरकाचूर
अकरकरा बादामगिरपिस्तेकेसरमा
सि ४ कस्तूरी २ सबको मिलागोलीवां
धे १ तोलेभरखाय ओर अमलगध
दोनोंमसली १ गुणी दुधमेंपकाबेज
व जबजायतब छायामेंबराबरखो

डमिला २१ मासे दुधकेसंगखायेर
गडजलाहोय ॥

वंधेजकीओषद

लोंग२टंक जायफल३ अफीम४टं
क मसूरी २रत्ती सवकोवारीक स
हतमेंमिलोके ऐकतोलेभरकीगोली
वंगलेमें धरकेखाय वार्जवाहर नही
आचे गुटिका ॥ कालेतीतर को७
दिन दूधपिलावे आठवेंदिनटंकप
णखववावेउसकीवीठगर्मजलसेधो
वे भोगकेसम्यमुंहमेंएवेथके नहीं
औरदारचीनी मिलकोलेसहतमेंब
राबर मिलावे७मासेकीगोलीसोते

तमिवाये मिथनके पीछे एकपहर ठेर
रहे ॥ औरसके २ अंडेमेछेदकर
के कमरमेंबांधेवीर्जस्थभनहो ॥

और कोंचकीजड़ एकअगुल
केवरावरकाटमिथुनकेसम्यमुहमें
घेर रसचोंकतारहे वीर्जकायमरहे
पक्षीवंगनलाके वीजनिकासेपीप
लटांक२ भरऊपर माटीलगायेआ
गमेंडारे तवपीपलवांटिकेक छाया
मेंसुकावे दालचीनीवरावरमिलाके
आधीटांकसहतमिलाकेगोलीबां
धे मिथुनसेपहलेथुकमेंघिसकर इ
न्द्रीपेलेप करे तोवीर्जस्थभनवस्य

होय और लोग दारचीनी मोट अक
रकरा मकमुनियावरावरले अदरक
के अरक में गोली बांधे महत में घिस
गर्म करं लेपकरे सुकाके मुथन करे
और मुरदासिंगा चूहे की लेडी मिल
के लेपकरे॥ और ॥

मावस्या वा पूर्णमासी को मैथुन क
रने से मनुष्य बल हीन हो जाता है और
पड़ पड़ मिथन करने से कमर में दर्द
हो जाता है और वि मंगल वस्पति
वार न में गर्भ रहै तो बेटा हो
अन वार मैथुन करे तो बेटा गूगा होय
भृगु वार को देव तो अंधा पुत्र पैदा होय

मेथुनपीछेपानीपीनाबुराहै मिथु
नपीछेदूधपीवेयासद्दतयापुराना
गुड़खाये तोशरीरकाबलनघटे

इन्द्रकाइलाज

वितेलिकोमिंगीवकरीकीचरवी
मेंमिलाकिइन्द्रीपेमलेतीवाकप
नमिटजायेमोटाहोय ॥

औरऔषद

महागाकूटमैंमलवगावालैकेकप
डछतकरकेदोदामचमेलीकेअ
कमेंमिलातेलतिलोंमेंकपडछ
नकेरतीमोटाहो ॥

विधि २

समन्दरफल दारहलदी गंधेकेपे
शावमेंघिसका मले तो मोढाही

नामर्दकोइलाज

गूगलसपेद १॰ छुहारे २१ छुहारोंको
दूधमेंपकावे बीजनिकासकेगूगल
भीमुंहबंद करकेगेंहूकोगोट केबीच
मेंकरकेबकरी कोमेंगनीमेंदाबदे ।
फिरनिकासके २१ दिन खायेपुरु
ष अमली आजाय वागी देटवलकी
कारत और पोतों परमजनहोयउ
सकीओषद ॥

विधि

कायफलमाटीमुलतानी बराबर

पानीमें जोशदे केलेपकरे ॥

दूसरीविधि

उडद की दाल छिलके सगेत पकी
ङईमलकेलेपको ॥ और ॥
कानके वीचकीतसमें छेद करके
सोनेकीवाली पहरे ॥

सोजाककीदवा

बदाममुरहटी कचेलिसोंदे चार२
मासेलुग्राबनिकालका एकपेसे
मनमिश्री मिला पीवै ॥

प्रमहकीदवा

सुम्वालाधाम ५माशे हलेलजंगी
५ मासे खैर चीनी ५ मासे प्रातः

कालमायनकालरवाये दिन ५।
और औषद जलनजातिकी
आमलेकारक अथवाइस्प्रो
लकेलुआबमेंइन्द्रीकोमलकेमू
ते ॥ इन्द्रीजुलाब
कवाबचीनी १२ रेवतचीनी १२ म
लहटी १२ जीरासपद १२ मोराकल
मी १२ तोले घेला घेलाभर मिश्री
डेढ़ पैसभर तीनमोताज पीवे॥

दूसरीविधि

घीवीकरेह आधसेरघडामेंडाल
केखांड आधसेर मिलाके पीवेवह
त अच्छी सफाई हो॥

सफ़ूफ़

आजार२ मासें विहदानेके लुआब के७ दिन खाय ॥

दूसरी विधि

मूसलीस्याह लिसोडेकी उडकी छालसे वलकी जड उटकटेरीकी छाल वरावरलेके खांड मिला १पैसा भर दूधके साथ २१ पीवे ॥

औषद

अवासदाना कत्था सफ़ेद मुरहटी कालातिली वरावर इकट्ठा करके ४ पुड़ियाके १ पुडिया न' जपानीके साथ खाये ॥ और औषद

छुहाए१ धिन्यां २ दाम राची कों
पानमिंगावेप्रातः काल मसाकुर
ना१ रत्तीडालके खाये ऊपरसे
धनिये का पानीपीवे॥

अतिश्रारथात
गरमीकी औषद
प्रथम जुलाबली॥औषध ॥
मनाये ६मासि इड़ज़गी ६मुनक्का
६ मासे मिसरी १तोले दूधकेसाथ
प्रातः काल पीवे संध्यासम्य चांव
ल और धहीखाये
गौरऔषद
जमालगोटा को मेंसके गोवरसेंप

केउरका गूदा निकालके कपड़ेमे
धरकेकूटे तामं चिकनाई दूर हो।
फिर जावन्तरी तारपयलकी मींगी
छुराबादाम खौंड मिलाके दोपे
मिश्र खाये सीतल जल पीवे दस्त
अच्छे होंगे सरवतपीतेवंद होंप
हले ३ मंजिस पीवे चौथे दिन जुला
बले ॥ और औषद
एसकपर लोंग मिर्चकत्था सपेद
अकरकरा बराबर तील मेंवंगले
के अरकमें खरल करके चनाबरा
बर गोली बांधे एकसवेरेएकसंध्या
निगल्लजाय और गोली को घिस

कर घावपरमले ॥

जुलाब

हड़जंगी१२ मुनक्का१२ कालीमर्च १२ मिश्री३० ॥ डेढ़ पैसे भर सं ध्यासवेरे गर्मपानी केसंग पीवे दि न७ तक अच्छा हो

मल्लहम

जलीसुपारी जलीकेडी मुरदासं हड़जंतगी५ पान२ दामनीला थोथा दोरली घावपरलेपकरे ॥

अंगमुकडनेकी

औषद

छोटीमाई मालकंगनी हड़जंगीफ

पूरा समन्दर सोष फिट करी होमा
से पानीमें पीसके भागमले ।।

और औषद

घोड़ी के दूधमें लोंग को तरकर
के भगमें राखे मुकड़ जाय

भग चौडी होनेकी दवा

गहूंका आटा गाय का घी सहत
नमक भगमें मले ॥

और औषद

सिंदूर १ मासे बांस कीत ली मल
के भगमें फूकमारे दो तीन दिन
को ॥ मिथुनके समय भग
का शब्द मिटे ॥

भंगराके रसमेंकपड़ाभिजोके सुका
वेफिर शराब मेंभिजोके भगमेंमले।
इसीप्रकार २ दिनकेर नोभगका श्रा
ब मिटे॥ औषधि भगकीदुर्गंधके
खोनेकेलिये॥नीमकेपत्ते आटाके
भगकोधोवे। और औषधी॥कस्तूरी
कपूर केसर जायफल गुलाब सन्द
लकीभगमेंधूनीदेदुर्गंधजानीरहे॥
बालोंकेबढ़नेकीऔषधी॥हाथीदं
तजलाकर आमलेकेजलमेंघिसके
मले॥ और औषधी॥बेरीकेपत्तेमें
सकेदूधकेसाग आमलेनीनोंको।
पीसकेरात्रिकोलगावसवेरे गरमपा

नीसेधोवे।बाल उखाड़नेकीदवा॥
गोदंनीहरताल ५मासेजवाखारमा
से ५पोसन १०मासेजलोकेकेले के
पानीमेंबालोंपरमले॥और औषध
॥जोंकोसुकाकेघोड़ेकीलीदमें
४०दिनराखेजहांमलेवहांबालनउ
पजे॥बादरवेराकीऔषधी॥चीते
के पत्ते सिरकेमेंपीसकेमले॥और
औषधी॥गोंदअरबीमूलीकेपत्ते
काअरक आमलेजलोकेबिनोलै
घीगायका १००बारधोकेऔषधी
मिलायलगावे॥बालोंकेसाफ़कर
नेकीऔषधी॥खेरेअनारकाछि

लका आमले सिरका अंगूर गायका
दुध और सिरके को जोशदेके दवा
मिलाके सीसेमें रखे कुछ दिन मल
के धोके चालनम और साफ़ वाका
लेहे जाय ॥ बल टूटे नहिं साफ़ मज़
बूत होनेकी और औषधी ॥ आमले
काला ज़ीरा गायका घी गायके दूध
की छाछ में जोशदेके मले और धोवे
॥ जूएं दूर होनेकी औषधी ॥ बाय
विड़ंग सिरसका छिलका गोमूत्र
मले कंघाकरे । और औषधी । खा
डनीबूका रस हाल घीसके मले ॥
कुचामे दूध बढ़ने की औषधी ॥

सेंधानून साठीचावलका आटागाय
केदूधमेंहरीरा बनाकेखाय॥दूधसु
कानेकीओषधी॥जीरासुफ़ेद ईसब
गोलकालुआबजौका आटाकईबार
लेपकरे॥बेरीके पत्तेऊपरसेंदू
रमलकेबुहारीकीसींकमेंमेलकेछ
प्परमेंलटकावेदूधस्रवे॥जवानल
गाईकीकुचापड़ीहुईस्रवनहोनेकं
ओषधी॥अनारकाछिलका मोलसि
री जामनछोटीलोधजौकोबकरके
तांबेकेपात्रमेंनिलीकेतेलसमेनपा
नीमेंजोशदेकरलगावेकुचास्रवन
होंभगसुकेड़॥कुचबड़ीहोनेकूंदवा

असगंधछोटीकटाईकटूकीजड़का
छिलकासेनज़ीरएभेंसकेघृतमेंमले
बडीहोंय ॥कुचाछोटीहोनेकीदवा
।स्याहदानेलीलाधोयाकंगनीघृत
मेंमिलाकरमले ॥कुचाजानीरहनें
कीबिधी ॥स्त्रीरजस्वलाहोयतबप
हलीबारकालोहूअथवाअथवाश्वो
रबारकालगावेतोकुचजानीरहैं ।अ
थ्रौरश्रौषधी ॥छछूंदरकोसुकाकेज
लावेचूहेकीमेंगनीमेंमिलाकेघीके
संगलेपकरेंजानीरहैं ॥थनेलेकीबी
मारीकीश्रौषधी ॥सहजनेकेपत्तेपी
सकेलेपकरे ॥श्रौरश्रौषधी ॥ग्वार

कापाठाहल्दीपीसकेलेपकरे ॥
कुचाकेदर्दजानेकीऔषधी ॥बड़ी
हड़बायविड़ंगइहीमेंपीसकेलेप
करे ॥स्त्रीकर्मबन्धनकीऔषधी ॥
बबूलकीकोंपलयानीमेंऔरकेमि
श्रीमिलावसफूफकुरवाली ४मासे
फाकेकेपीवे ॥स्त्रीकर्मखुलनेकीद
वा ॥रेवनचीनी ६मासेदूधकीलस्सी
केसाथपीवे ॥जोमनुष्यरजस्वलास्त्री
सेमैथुनकरबीमारहोजाय तोक्या
भीआरम्भहोय ॥ और औषधी ॥नि
तीकोनेलगुड़सुहागामेलकेपीवे
॥स्त्रीकीभगमेंलोहूलालकालापी

लासफ़ैदजायतासेदूबरीहोयहाथ
पांवमेंसूजनहोजायताकेदूरकरने
कीश्रौषधी॥नागकेसरमस्तंगी इ
लायचीबंसलोचन५पांच २मासेमु
रब्बी १२॥कबाबचीनी७मासेमिस्री
४तोलेपानीकेसंग संध्यासकोर४मा
सेखाय॥लोहूपीलेकीश्रौषधी॥
जोबारीसेहोकायफलकूट दूधके
संगखाय।श्रौरथोडीबायबिडंगमि
लाकेसाफ़ालो।लोहूलालकीश्रौष
धी॥इलायचीमैंसलकड़ीबन्सलो
चनमिसरीकेसंगखाय ७दिन दूध
चावलकीखुराक॥लोहूसफ़ैदकी

औषध ॥ बायबिडंगचीनासंधीदा
लचीनीइंद्रजोबराबरपानीमेंपीस
करखाय॥धानआपसेआपनिक
सेनाकीऔषध॥चौलाईकीजड़
सिरसकाबीजकबाबचीनीनेजपा
तमुलेठी८मासेदूधकेसाथ२५दिन
पीवे॥ औरऔषध॥सिंघाड़ागोख
रूबड़ीइलायचीबंबूलकागोंदसें
बलकागोंदखांडबराबरमिलाके
ह्येलीमेंधरकेफांके॥ उक्टनामुंह
का॥पीलीसरसोंगोखरूसोंठमोथ
कपूरलालचन्दनचिरोंजीएनकोमुं
हूपैमलेसवेरगर्मपानीसेधोवे॥

औरऔषधी॥मसूरकीदालतजसों
फ़कूटमुलहठीकेसरइलायचीपी
सकेगुलाबमेंमले॥उबटनाबदन
का॥हलदीगोरवरूमोथासरसोंपी
लीकपूरकस्तूमलालचन्दनछडीला
चिरौंजीमेंमिलाकेबदनपरमले॥
मस्सामुहांसादूरहोनेकीऔषधी॥
नजधनियांलोधबराबरपीसकेम
लेमुहांसामस्साजाय॥नीमकेफल
निफलालोधचीनातेलमेंमिलाके
मुंहपरमलेमुहांसाजाय॥छाईदू
रहोयनाकीऔषधी॥नारंगीका
छिलकामसूरकीदालकस्तूमम्बा

रकेपेहकाअकसेखमीरकरकेम
लेगरमपानीमेंधोवे ॥ मुहमेंदुर्गंध
आवेनाकीओषधी ॥ अकर्करा जा
वित्रीबराबर पानीमेंगोलीबांधेसो
३ दिवस मंहमेंराखे ॥ मिस्सीदांतों
कालोहबन्दहोय नाकीओषधी ॥
लोहचूनकल्यासकेदलीलाधे
भुनाहुआहरेनास्तपालभुनाहुआ
हींराकसीसमेदालकडीआमले।
माजूफलभुनाहुआलोधसबको
बारीकपीसकेनारियलमेंराखे
सवेरेसंध्यामलेऊपरसेनिलीके
नेलसेकुल्लाकरे ॥ मनोहर बानी

होनेकीश्रौषधी॥नजकाली मिर
चकुलंजननीनोंबीजेंबराबरनीन
नीनमासे१५दिनखायश्रावाज़सा
फ़होयखटाईबारीकापरहेज़करे
॥श्रौरश्रौषधी॥सोंठ मुन्डी नज़पी
पलबराबरसहनमेंमाज्जून बनाके
खायदिनसात॥स्त्रीबशीहोयना
कीश्रौषधी॥मावस्याकोलोंग १
इन्द्रीकेमुंहमेंराखेजबसेमावस्या
लगेतबमावस्याबीतेतबवाको
निकालेस्त्रीकोखवावेबशीहोय॥
पुरुषबशीहोयनाकीश्रौषधी॥
लोंगकोस्त्री नीनदिनखलाहोय

नवभागमेंरखेपुरुषकोरखुलावेतो
बशीहोय॥स्त्रीपुरुषकेशरीरमेंका
मदेवचैनन्यनहींहोयनाकीश्रौष
द॥फिटकरी१मासेसर्बनकेसंग
सवेरहीपीवे॥स्त्रीकोकामदेवचैन
न्यहोनेकासमयबर्णनकरतेहैं॥
प्रथमदूरसेआईहोय।दूसरेदोनी
नदिनबीमाररहीहोय।तीसरेको
धकरकिसीसेलड़ीहोय।चौथेशरा
बपीहोय।पांचवेंदोतीनमहिनेंका
गर्भहोय।छटेरजस्वलाहोकेस्नान
कियाहोय॥पुरुषबन्धन॥ऊंटका
हाड़पुरुषकेसिरकाबालनावीश

करकेबांधेमैथुननहींकरसके ॥
पुरुषकेखोलनेकीबिधी॥सेंबल
कागोंदबन्सलोचन पीसकेदूधके
साथखायऔरमोनीघिसकेपीवे।
स्त्रीबन्धेजकीबिधी॥बीरबहूटीके
चुवालिंग पेमलकेमैथुनकरे॥
स्त्रीकेखोलनेकीबिधी॥भगको
धोकेवहपानीकुत्तेको पिलावे ॥
स्त्रीछूटनेकीबिधी॥सुफ़ेदबालबू
ढीस्त्रीकेजलाकेसहनसुहागामिला
केइन्द्रीपरलेपकरकेमैथुनकरेतो
स्त्रीछूटजाय॥और सुहागापानमें
खवावेस्त्रीछूटे॥गर्भवानस्त्रीकेपे

टकारद्द दूरहोयनाकीश्रौषधी ॥
अनारदाना सोंफ मुनक्काछोटीहड़
श्रौटाके गुलकंद मेलकेपीवे। श्रौर
श्रौषधी ॥ निलीके तेलमेंनिलीपी
सूकेसीर गरमसिरमेंमले ॥ श्रौरद्द
वा ॥ नेजपान नागर मोथासफ़फ
करकेसरबत श्रौर ईसबगोलकेस
गपीवे ॥ स्त्रीकेपेटमेंलोहूबुराहग
याहोयनो निकसजायनाकी श्रौष
धी ॥ मिसरीकासरबतनगरमकरके
पीपलगजपीपलसोंठउसमेंपीस।
केदोनीनसिनपीवे ॥ स्त्रीकेजनेके
पीछेपेटबड़ारहेनोछोयहोजायना

की औषधी ॥ पानी थोड़ा पीवे खांड
जिननीरवाई जायखाय ॥ और औ
षधी ॥ इंद्रायन पानीमें घिसके पे
टपरलेपकरेकईबारनोपेटछोटा
होजाय ॥ मरा बालकस्त्रीकेपेट से
पैदाहोयउसकीपहचान ॥ स्त्रीके
हाथपांवठंडेहोजांयऔरजल्दी
२दमचले ॥ इलाज ॥ धुहरकादूध
सिरपैमलै सांपकीकांचलीकीधू
नीदे ॥ और औषधी ॥ धानकीजड़
चीना औटाकेपीवे ॥ चारपांचमा
सकागर्भगिरजायनाकीऔषधी ॥
दोमटकेपानीकेभरे दोनोंहाथोंमें

लेकर खूब कूटे और दीपकको बु
झाके उसका धुवां सूंघे ॥ और कुम्हा
रके हाथमें जो मट्टी बरतन बनाने
के समय लगी रहजाती है उसको
लावे बकरीके दूधमें पीवे और कु
वारीकन्याका काना स्तन सिरसों
पांवतक नापके नोलड़ाकरे सात
टुकड़े न्यारे न्यारे सूतमें बांधके क
मरमें बांधे तो गर्भ गिरजाय ॥ अथ
स्त्रीके ८ महीनेके गर्भकी परीक्षा ॥
स्त्रीका बदन भारी रहै भूख घटे सुस्ती
शरीरमें उत्पन्न होय मोथेपर गुल्ल
टपरैं चूंचीका शिर काला होजाय

उहभेषानीभर श्रावनौ सरुनासिर
का मिलाके खायपेर दर्द करैनौगर्भ
है सही॥ बेरा बेटी होनेकी पहिचा
न॥ स्त्रीका हाथ लाल होयनौ बेटा
सुफैद होयनौ बेटी॥ श्रौर दूधकी बू
द श्राइनापर डाले धूपमें धरे मोती
सा होयनौ बेटा बिखर जायनौ बेटी
॥ स्त्रीबांझ होय गर्भ नहीं रहै॥ बाज
कीबीट २ तोला खाय शराबमें श्र
थवा श्रौर चीज़में खाय॥ श्रौर औ
षधी॥ ग्रज पीपल पिस्तेका छिल
का बराबर २ पैसाभर १ महीनातक
खाय॥ गर्भ रहनेंकी औषधी ॥

सुपारीकाफूल इसवन्द अजवाय
न बायबिडंग ४ चार चार मासेसभी
चावलसेर ३। पांचसकीमेंपीसके
पानीमेंगोली बांधेनीनवारखी।
कर्मकेपीछेखान २ हिनखायनो
गर्भरहै॥ और औषधी॥ सोंठछ
वेरकाछिलका बन्सलोचन श्र
सगंधनागौरीकूटछानकेस्त्रीक
र्मकेपीछेहिन १२ खाय॥ जिसस्त्री
के १बेटाहुवाहोय॥ चमेलीकीज
ड़काछिलका ४ मासेकालीगायके
दूधमेंजहांगायदोहीजाय पीवस
थेकेसामनेमुंहकरकेमांगेग्रास

पूरणहोय। और औषधी॥ लड़के
कानालखाय मिश्रीसेमिलाके
और हिरनोटेकीइन्द्रीखाय॥ औ
रऔष॰॥ कसौंदीकीजड़बकरी
केदूधमेंपीसकेखाय और पला
सकाबीज गायकेघीमेंपीसकेभ
गमेंलेपकरे रजस्वलानहीहोय नौ
भीगर्भरहे॥ और औषधी॥ छुहारे
२५ धानियेंकीजड़ २पैसाभर गायके
दूधमेंओटाके ७ दिनखाय। और औ
षधी॥ सुपेदकंगनीगायकेदूधमें
जिसकेनीचेबछड़ाहोयस्त्रीकर्मके
पीछेखाय बांझहोयनौभीगर्भरहे॥

जिस स्त्रीनें बेटा जना होय और बेटी
चाहे ॥ कड़वी तोरई को साफ करके
छिलका दूर करे भगमें रक्खे फिर पा
नी से धोके पुरुष के संग मैथुन करे
॥ और मेथी को लड्डू खाय । और चिक
नी सुपारी दूध में पीस के पीवे । औ
र औषधी ॥ जाय फल को पुरुष नो
ड़ी नट्ट के में से २ में गुड़ लपेट के सि
रपे वार के घर के पिछवाड़े फेंके २
दरवाजे के पास जहां छप्पर से पानी
पड़े खाय २ घर में पुरुष खाय कोई न
जाने तो बेटी पैदा होयगी ॥ नले का
दर्द जायना की औषधी ॥ सोंप हल

हल्दी कल्क बराबर पीसके दर्द पे
लेपकरे ॥ और औषधी ॥ गरम पानी
से मलवाके पीछे रोगन बेर अंजीर
गेरू मिलाके हौले २ मले ॥ खुजली
भगके मांहर और दर्दनाकी औषधी
॥ धोवीका खार लावे भगको धोवे
। और हींग सिरायनापानीमें औटा
के भग धोवे गर्म गिरजायलोहूरा
धपीलापानी निकसे मैथुनके समे
यपुरुषकीइंद्रीलोहू में रंजायना
की औषधी ॥ अनारकीकलीनास
पालबिलायनीदोनोंमासेपानी
में पीसके सेंकाकरे ॥ आरामपेदा ।

काएकरी लीला योथा योड़ाक
ला पानीमें पीसके रेसममें लपेट
के भगमेंमेले ॥ और औषधी इ
सी मर्ज़की ॥ नारंगी की पत्ती स्
की हुई नीनमासे १ तोलेभर श
हद में खायजोकीड़े पड़गयेहोंय
तोकीड़ेभीजातेरहें ॥ पेटकीगरमी
इ होय याऔषधसे ॥ चोबचीनी
सालबमिश्रीदालचीनीइलायची
मिश्रीचौगुनी ६मासेइधकीलस्सी
केसंगपीवेपेटकीगरमीऔरखु
जलीऔरजलनजातीरहै इसनु
सरदेके करनेसे ॥

स्त्रीकेजनेकेपीछेभगचौडीहोय
वाकेनंगकरनेकीश्रौषधी॥वीर
बहुटीपानीमेंपीसकेभगपरले
पकरेश्रौरघीमेंपीसकेभगपर
लेपकरेभगकेभीनरश्रथवा ज
ञाकोबालकके पैदाहोनेही ए
रावमेंबैठावेतौभगतंगहोजाय॥
गुदाकादर्द्द दूर होयजोगर्भस्यानके
बढ़नेसेहोय। करेलिकीजड़पानी
मेंपीसकेभगमेंलेपकरेजोभीनर
जायफ़ायदाकरेश्रारामहोय॥
पेटमेंगांठ वादीसेपड़ीहोश्रौरश्र
फ़ारहोयश्रंडेकबीज पीसके

सूंडी के थोड़ पास लेयकरे ॥
दूई सूंडी के नीचे गर्भ स्थानके फू
लने से होय नाकी औषधी ॥ मू
सली इसबन्द और असगंध सिं
घाड़े थोडा गुड़ मिलाके खायक
मर का दर्द और बफ़ारा इस औ
षधी से जाना रहै ॥

कोक का
तीसरा भाग स
माप्तम

कोक

मुन्शीरामधन ढुंढरनें
हिन्दीभाषामें उल्था
किया

दरशहरमथुरा

श्यामसनोहरमनवश्र
मेंछपागया
संवत्
१९१०

श्रीगणेशायनमः

जान्नाचाहियेकिईश्वरकीअनिच्या
लनासेमनुष्यदेहप्राप्तहोनीहै और
संसारमेंतीन पदार्थोंकासुखमनु
ष्यकेयोग्यहै एकतोद्रव्यकासंच
यकरना।दूसरे हरिभजन।तीसरे
भामिनीकाभोग।जोकि।विषय
स्वादसबजीवोंको आनन्ददायक
है परन्तुहावभावकटाक्षकरके
पूर्णानन्दकीप्राप्तीमनुष्यहीकोहो
तीहै इसलियेलोगोंकोअवश्यहै
कि इसकोकग्रंथकोपढ़करचतु
रईअरुबुद्धिवानोंकिसाथकामिनी

के संग हास विलास रति केलि कला
को परम आनंद लहै कौन कि । दोहा
मिलै विनछन्द हि रवै अलगी ना
विनज्ञान । कोक पढ़े विन निकरैं
नर पशु समान ॥ प्रगट होकि स्त्री
चार वर्ण की है । पद्मिनी २ चित्रनी ३
शंखिनी ३ हस्तिनी ४ इनमेंसे

पद्मिनीकी परीक्षा

जिसका सब अंग अति कोमल होय
पद्म के समान और वस्त्र का वर्ण हो
य नख से सुवास सो भंवर मतवारे
होंय वह और गंजारा करैं अनियारे
मृग मछली से नैन जिलके पुष्प की

समान नासिका गरेमें मीन गुलन्दम
नो शोभाके समुद्रमें नदियां प्रकाशिन
है मृगनयनी धनुष भृगुटी कटिके
हरी समजान हंस मुख सुन्दर हंस ग
नि इन्दु मुखी पहिचान लज्जवंती ल
ज्जा भरी कोरे लोवे बार उजले वस्त्र म
नमनधरे सोहे पद्मिनीनार छोड़ा सा
अंगमनोहर बानी ॥ धान्के जलकी
बास कमलके समान ज्योन बिन्दा
ल चार अंगुल गहरी मरिगल सुस्ग
वण ॥ चित्रनीकी परीक्षा ॥
जिसकी तज धजरूपरंग चित्रके सम
लहोय और अनर आदि सुगंधिन से

निसदिनचित्तकोप्रफुल्लितराखेना
चेनगानेमेंअति प्रवीनहोयहरघड़ी
अनेकप्रकारकरनवीनवस्त्रनसेअं
गकूंशोभितराखे। चतुरनारचित्तसम
लेहमनोहरमधुरबैन। कोरेकोमल
कसहोयमृगरंजनसेनैन। नामोरी
नाडूबरीअतिसुन्दरसबअंग। नाहि
करुनहैंचित्तनीचतुराईजिससंग।
धानकेजलकीवासलहनकेसमान
जोनपरयोसेकोमलबाल। छः मं
गुलमहरीप्रमाणहिरनीबरण॥

अथशंखिनीकीपरीक्षा

जिसकाशरीरदुबलाहोयऔरभरी

दंड करी पिंडली पनली जांघ कडवा
वचन कामातुर भोग योग में पुरुष के
गले से लिपट चुलबुलाट से वाके अं
गमें चुकटी भरे अरु काटे ॥ जाका लं
बा वदन होय और दुबला अंग लम्बी
होवे नासिका चाल चले बहु रंगा छो
टेकुच और नैन होंय पनरी होवे रान
मन मांहि क्रोधि न रहे नाहि शंषनी
जान ॥ धान्के जल में गली वस्तु की
सी गंध आवे जोनि पर कारे बाल बहु
तेहनो अंगुल गहरी परिमान घोड़ी
वरण ॥ हस्तिनी की परीक्षा ॥
जिसका वदन मोटा और कलेवड़े हों

पनांघ अरु पिंडली और रुनेलीका मां
समाहोय निर्लज्ज निडर अरु
स्त्रियोंकी नराखे लाज आपकाजसे
राखेकाज पर पुरुष निकारी ॥ तनमे
दाकेलवेड़ कोनह गरदनजान ॥ छोटी
मोटी अंगुलीभरे कवायहिचान ॥ लाज
हीनपनेरे नयन हननीकेसी चाल ॥
जाहि कहत हैं हस्तिनी नाहि मधुरेबा
ले ॥ जांघ और पिंडरी परबाल होय का
मकिलोलके समयदोनों पावपुरुष
कीगर्दन पर मोरेकाम करनधीमेनंसे
कोरबाल अति गले अरु करे घाव
के जलकी गंध नीलकी गंधके समान

१२ अंगुल गली प्रमाण सिल्लनी व
ण ॥ पुरुष चार प्रकार के हैं ॥
हस्सा १ मृग २ घोड़ा ३ हाथी ४
हस्सा पुरुष की परीक्षा
जिसका कोमल अंग हो और गोल
मुख बड़ी आंख छोटे २ दांत सिर से
पांव तक मानो सांचे की ढली मूर्ति
है और [illegible] योग्य
[illegible] ॥
[illegible] ॥
काधन उपजे सुपने में अपने नयन
पूरीले । छोटा तन चमका अरुणं
हस्सा सुन्दर बाला ॥ [illegible]

बुज नयन कोमल कोर बाल। विषय
भोग में थोडी रुचि होय इन्द्री प्रमान
४ अंगुल वीर्य में कमल की आवे ॥

मृग पुरुष की परीक्षा

जिस का सुन्दर अंग कोमल शरीर
होय और सुन्दर वरण मनोहर बानी
चरण ईहस्य बसे राग सों प्रीति को
मल नन सुन्दर नयन स्निग्ध पवित्र सु
भनीनि। दंत पांति शोभित सम सम
नुमुक्ता वल पांनि। अरुण अधर ध्वनि
भकरि नजर बाणि स्त्री में अंगति वि
षय भोग में प्रीति समय पर इन्द्री प्र
मान ईअंगुल धानु जल में गंध सरु

समान ॥

हस्तीपुरुषके लक्षण

जिसके अंग पर बाल बहुत होंछोटे
नैन भारी दंड मोटा आनन चौड़ा मांथा
अन्न बहुत खाय हृदय में बैर भाव
राखे। बुद्धि मानों में बैठे पान
खाने में प्रीति राखे मोटा आनन छोटे न
यन भारी होवे दंड चौडा मांथा उन्मा
नी बैर भाव कर संड। क्रोध समय ला
जे नहीं वा के मोउर उपजाय। श्रीरम
के मुख के हृदय अग्नि सी देलगाय ५
काम किलोल में भूले ज्ञान दृमो आप
नकी संभालन रहे इद्री प्रमाए ६ अं

गुलकीधानजलमेंगलीवस्तुकीगंध
परीक्षाहाथीमनुष्यकी
सिकाशरीरइन्द्रीसहितश्रोत्रेन्द्रि
यलीनांनाकहाथआदिबडाहोय
कवचआलसीनेभीनिंद्रामें
आशक्तिहोसदाबेचैनरहै लक्कवा
लचैले।मठाईखानेमंप्रसन्नहोय॥
हरननलंबाबड़ामूरखहस्यनचे
ना।निद्रामें आशक्तिहोकाहूसोनाहे
ने।आपकाजबेकारनेकरश्रोत्रकी
हानि।दुर्बीरहै निसदिनसदाकरीन
पावमान।मोटीस्त्रीसेविषयमेंअति
सुषमानेइन्द्रीप्रमाण१२अंगुलधान

मेंनीलगंध ॥ अबलाबाचाहि
कि विषयभोगमेंस्त्रीपुरुषकाथो
डीन प्रकारपरहै इसकाव्याख्यने
कि समरनि२ उच्चरनी२ नीचरनी२

समरनिकावर्णन

स्त्री और पुरुषदोनोंएकहीचरणमें
होयजैसाआगेदसयंत्रमेंलिखारहै

समरनि	स्त्री	पद्मिनी	चित्रनी	शंखिनी	हस्तिनी
	पुरुष	सुशा	भिन्न	घोड़ा	राधी

समरनिमेंस्त्रीपुरुषकोसमानआने
सेप्राप्तिहोनाहै

उच्चरनिकावर्णन

उच्चरनिमेंस्त्रीनीचऔरपुरुषउत्तम

स्त्री	स्त्री	पक्षिनी	चित्रनी	शंखिनी	हस्तनी
पुरुष	पुरुष	हिरन	घोडा	हाथी	०

इसमेंस्त्रीपुरुषदोनोंको उत्तमसुख मिलनाहै। नीचरतिकावर्णन ॥

नीचरतिमेंपुरुषनीचस्त्रीउच्चहोवे

स्त्री	स्त्री	पक्षिनी	चित्रनी	शंखनी	हस्तनी
पुरुष	पुरुष	०	सुसा	हिरन	घोडा

नीचरतिमेंस्त्रीकोसुपनेमेंभीसुख नहिंमिलनापुरुषनोहांहूंकरकेश्र मनेमनमेंसुखमानलीनाहै॥

इसभेदकाननयहहैकिजहांपुरुषब लवानऔरस्त्रीबलहीनहोनहांदो नोंकोआनंदप्राप्तहोनाहैऔरजहां

स्त्री बलवान और पुरुष बलहीन हो
यन हां स्त्री को सुख नहीं मिलता कदा
चित कोई निर्बल चतुर मनुष्य अ
नेकों रीति से बलवान स्त्री को प्र
सन्न करे परंतु यह बात असंभव है
। प्रगट हो कि कोक वाले बड़े सोच
विचार के साथ योनि षोडश जो
काम देव के रहने के स्थान पुरुष औ
रत के अंग में जाने हैं सो इस भांति हैं
मनुष्य के अंग में तीन जगह काम दे
वका वास है और न्यारी २ रीति से वे
न्य होता है उसके जानने की रीति
आगे लिखते हैं

कामेस्व कावास	कामदेवकेचैतन्यकरनेकीरीति ॥
श्रारव	स्त्रीपूरुषस्मरनकेदेखनसेजागताहै
कमर	स्त्रीकोबालमेंलेकेप्यारकरनेसे
कोने	स्त्रीकेसाथविषयभोगकरनेसे

श्री

श्रौरस्त्रीकेश्रंगमेंबायेंनरफ़ १५स्था
नकामदेवरहताहैकृष्णपक्षमेंप्रति
दिनमस्तकसेंचेकोउतरताहुश्रा
श्राताहैश्रौरशुक्लपक्षमेंप्रतिदिन
पांवकीश्रंगुलीसेचढ़ताहुश्राऊप
रकोश्राताहैश्रौरन्यारी२तिथोंमें
न्यारीन्यारीरीतिसेचैतन्यहोताहै

स्त्रीकेकामदेवचैतन्यकरनेकी
रीतिजाकेघरकामजागेसोसिधनेसे

कामदेवके स्थान नवांगना	कामदेवके चैतन्यके रनेकरीति
१५ मस्तक	मस्तकमेंबाईनरफ़ुटकीभरे
१४ नेत्र	बायेंनेत्रकाचुम्बनकरे
१३ नीचल ओष्ठ	ओष्ठसेओष्ठकोपकड़केचूंसे
१२ गाल	नरमीसेकपोलचुम्बनकरे
११ कण्ठ	मुंहमेंलेकेजोरसेदोबमर्दनकरे
१० बग़ल	मसले
९ कुच	प्रथमनरम२पीछेजोरसेमसले
८ हृदय	मर्दनकरे
७ नाभि	उंगलीसेमर्दनकरे
६ कमर	मर्दनकरे
५ भग	त्रिकोणफ़लमेंजोनसेवाकोरे उंगलीसेपकड़केदोबोकामजो
४ जंघा	मर्दनकरेबाईजांघको

१३	३	गुल्म	मर्दनकरे
१४	२	पांनके	मर्दनकरे
३०	२	अंगुली पांव- कीनाड़ी	मर्दनकरे पांवकेअंगुष्ठकाना खलीनरफलैतोकामजागे

इसयंत्रकीरीतिसेकल्पकीए
कादशीउसीदिनसमझनाचाहिये
जिसदिनभगकेमर्दनतेस्त्रीकेअंग
मेंकामदेवचैतन्यहो ॥
जोस्त्रीपूरे ३० दिनमेंरजस्वलाहोती
हैउसकेलियेकल्पकीपड़वा
होतैजिनदिनस्त्रीस्नानकरे।प्रगटहो
किस्त्रीजोचारप्रकारकीहैंउनकोकाम
कीरुचिन्यारे २समयन्यारी २नियेमें
होतीहैइसलियेचतुरमनुष्यस्त्रीकेव

ऐविचारइसयंत्रकीरीतिसेभोगकरे।

पद्मिनी	चित्रनी	शंखिनी	हस्तिनी
रातचारती	रातचारती	अधीरात	रातअंधेरी
निधि२।२	तिथि८।१०	नि०३।७।११	नि०२५।९।१४
पहरअथन	दूसरापहर	पहरतीसरा	पहर चौथा

अबकामदेवकेचैतन्यहोनेकीरीतिस्त्रीकेअंग गमेंलिखतेहैंजानाचाहियेकिस्त्रीकेअंगमेंचु म्बनऔर प्यारकरनेसेकामदेवजगताहैइस लियेप्रथमचुंबनकरनेकीविधिकायंत्रलिखा

मस्तक	स्त्रीकेदोनोंहाथपकड़के माथाचुम्बे
नेत्र	स्त्रीकीकुचदोनोंहाथसेपकड़के दोनोंने त्रनकोचुम्बनकरे
गर्दन चूंबे	पीठफेरकरस्त्रीबैठेपुरुषउसकासिरफेर केगर्दनऔरगालकोचूम्बेफिरघुटनोंपैडालके
बग़ल चूंबे	स्त्रीपुरुषकास्तनोंपैकेसोरहीहोनवमर्द आकेस्त्रीकागलामाथागालचुंबचूम्बे

कुच मर्दन	स्त्रीकोछातीसेलगाकेमुखसेमुख आरसेआ ष्टमिलाकेदोउ प्रारसेस्त्रीकोदोनोकुचोंप नरमनरमहाथफेरे
गाल चुंबे	पुरुषकागालस्त्री चुम्बेऔर स्त्रीमुख फेर के अपनागालपुरुषकामुखछूवे
ओष्ठ चुंबे	स्त्रीकेओष्ठ अपनेमुखसेचुम्बनकरेऔ फिरदोनोंपरस्पर अधरामृतकोपानकरें
नख	दपनेआगेधरकेमुखसेमुख मिलाकरमो काचुम्बनकरे ॥

दूसराप्रकरणका

इसमें ८ प्रकारकाप्यारलिखागयाहै

१	पुरुषकेपीछेसेस्त्री अचानकचली आवेपु रुषकेमुखकोफेरकरचुम्बनकरे ॥
२	स्त्रीसोतेहुएपुरुषकीछातीसेछातीलगा करचिपटजायनरनकामोन्मत्तहोय ॥
३	स्त्रीछातीफेरकेपुरुषलिंगकोमर्दनमलक छातीकोनरमरमसेस्त्रीजागनेसेकामवतीहो
४	आधीरातमेंस्त्रीपुरुषदोनोंहोकरकेछातीसे लगाकेलिपटेपरस्परअधरामृतपानकरें ॥

५	स्त्रीहावभावकराकरकेपुरुषनेत्यारक रकेपुरुषस्त्रीकोछातीसेलगानरमकुचम
६	पुरुषखडाहोकेदोकिउठालेश्रोरछातीसेल गाकेगलेसेमिलावेश्रोरकपोलचुम्बे ॥
७	सेजेपुरुषबैठस्त्रीकोबायेघुटनपरबैठाकर दगलेमेंबेछातीकोमलेश्रोरगलबाहीकरके
८	पुरुषस्त्रीकोबाएंजांघपरबैठाकेअगलेचिकों पूलमेंजानसकेवाकीउटकीसेपकडकेमरद करेतबतकामेंअमलश्रेष्ठ ॥

पुरुषश्रौरस्त्रीकेकामकिलोलकेसम
यजिसरीनिकरकेपरमश्रानंदकीप्रा
प्तीहोयउसकावर्णन ॥ दोहा ॥ रहैंक
बूतरकीरुनकरैंगिरुजोबाज। या
हीमेंसकपैजैकछाकोकसोंकाज ॥
जान्नाचाहियेकिजबस्त्रीपुरुषकीसेज
परश्रावैनबप्रथमस्त्रीहावभावकरा

करकेपुरुषकेमनकोहर्षितकरेऔर
पुरुषस्त्रीकोअतिप्यारसेबायेंघुटने
पैबैठाकेबग़लमेंलेकेनरम२हाथउ
नकीसुन्दरसमूलकुचोंपरफेरेऔर
छातीसेछातीलगाकरअधरामृतको
पानकरैंऔरहंस२केमनकीप्रफु
ल्लताकोआपसेमिलालेंफिरगलबां
हीकरकेभौंनिकीरीतिसेस्त्रीकीभग
मेंजोत्रिकोणफूलमेंनसहैउसकोच
टकीसेपकड़केहौले२मलेऔरस्त्री
पुरुषकेलिंगकोहाथमेंपकड़केऐसे
समयमेंनसकेमलनेसेस्त्रीकेकामचै
नन्यहोगाऔरस्त्रीछुटजायगीऔरपु

के अंगमें लिपटकर भगको लिंगपर ध
रेगी पुरुष परन्तु जलदीन करै लिंगके
सिरको भगके मुंहपर लगादे जबतक
कोंमसलेने २ और ओष्ठसे ओष्ठमिला
ने २ स्त्रीकामके बसहोगी और पुरुष
के अंगसे लिपट चिपटके भगमें संपू
र्ण इन्द्रीको मेलना चाहै तब पुरुष आ
धालिंगभगमें मेलके स्त्रीको छातीसे
चिपटाले और कपोलचुम्बनकरके
छातीको थामतोहौले २ मलेफिजोर
सेपकड़े यहांतक कि जितनाशंयमें
जोरहोउसजोरसे छातीको पकड़े जोर
आनंदमें मगन और अचेतसेकछानी

ऊपरसे पुरुषका हाथनसे उठावे नौ
कामकी अचेतनामें अचेतस्त्रीकेवां
येपांवको अपने पुरुषदाहनेपांवके
नलेलम्बाकरके उसकेदाहिनेपांव
कोअपनेबायें परलाकस्त्रीकीकम
रपकड़केसंपूर्णलिंगभगमेंमेलिं
गकोधरनसेमिलादे और स्त्रीमर्दकी
कमरपकड़केधरनकोलिंगसेमिला
वेधरनफूलकीसूरतकेजबलिंगधर
नसेमिलनारहे तबपुरुषजानाजोना
हैकिलिंगएकतकड़ीस्त्रीकोकाची
लाकआधलाहैऔरदोसीकलिंग
कोपकड़नीहैजबधरनऔरलिंग

कायोगहोजायनवजैसेपुरुषधकाध
क्कीकरकेलिंगकोधरनपेमोरगनैसेस्त्री
स्त्रीबलकरकेधरनकालिंगकेसायर
गड़्गीधरनकोलिंगसेरगड़्नमेंजासुख
स्त्रीपुरुषकोप्राप्तिहोनाहैवोलिखने
मेंनहींआवेवासमयस्त्रीविषयकेस्म
नंदमेंमगनहोकेअचेतहोजायगीश्रा
खेंपथराजायगीबिकलहोजायगीस
रीरबलहीनहोगाहाथपावजैसेकैसे
पड़ेरहजांयगेऐसेसमयमेंदेखुईलेके
स्त्रीकेहोनेकीनियाकबिनोपरगड
क्षजावेनोभीस्त्रीकोचेतनहीहोवेजब
स्त्रीकीऐसीदशाहोनवजानाचाहिये

किस्त्रीको विषयसेआनंदप्राप्तिहुआ
वासमयपुरुषको चाहियेकिजिनना
अंगमेंज़ोरहोधक्कमार२स्त्रीकोवीर्य
बाहरनिकालेजबस्त्रीकोचैनहोगा
नबनौउसकोएकधक्कारवानेकीसाम
र्थ्यनहीरहेगीक्योंकि केलगनेसेलिं
गजोधरनपररगड़ारवायगास्त्रीको
ऐसानानपड़ेगामानोंघावपरनोन
बुरकाफिरनोस्त्रीपुरुषसेन्यारीदोजा
यगीऔरऐसेबुद्धिमानपुरुषकी जि
सनेऐसासुखदियाचैरीहोकररहैगी
प्रगटहोकिजोस्त्रीपुरुषदोनोंमेंअनि
दृधबूराकेसमानहोयऔरमैथुनके

समयजैसेपुरुषलाजहीनहोजाता
हैजैसेस्त्रीभीलाजछोड़हावभाव
कटाक्षकरकेपुरुषकेमनकोप्रसन्न
करतीहोतींकेमनमेंसदाआनंदकी
बढवारीहोतीहै औरजोएककामन
दूसरेसेफटाहोतोसदारसमेंविसघु
लनारहताहै आनंदकीप्राप्तिसपनें
मेंभीनहीहोती॥ जान्नाचाहियेकि
पुरुषसेस्त्रीमेंकामकीचाहनअठ
गुनीऔरलाजदशगुणीहोतीहै॥

स्त्रियोंकी अवस्थाका
होनाहै वर्णनउसेअवस्थाकी
पहचानलिखीहै

संख्या वर्ष	नाम	गुण अवस्थाका
१से ७लों	कन्या	लड़कपनके कारणरंगलड़कमें प्रीति करे॥
८से १३लों	गौरी	कुछमनमारकेपुरुषकीप्रीतिहृदयमेंधरे॥
१४से २०लों	बाला	सुगंधपानादिकमेंप्रीतिकरेपुरुषकोकामकिलोलकेद्वारा अपने ऊपर आशक्तिकरे॥
२१से ३०लों	तरुनी	गहनेऔर पोशाकसेप्रीतिकरेऔरकामकीकलामें अतिप्रवीनहोहावभावकटाक्षकरकेपुरुषकेसंगमैथुनक्रियाकेद्वारापरमआनंदकीप्राप्तीसेप्रसन्नरहे॥
३१से ४०तक	प्रौढ	प्यारप्रीतमोहितकरेपुरुषउसकेसंगविषयभोगकीअभिलाषाकरऔरबहुमीठी२बातोंसेपुरुषकेमनकोप्रसन्नरक्खे
४०से परे	परधा	पुरुषइसकेसंगमैथुनसेकरप्रीतकीरीतिसेजोवस्तुचाहेमंगवादेउसकेमनकोप्रसन्नरक्खे॥

मनुष्योंकीअवस्थाकावर्णन

अवस्था	नाम	गुणअवस्थाका
१से ५लौ	बाल	खेलकूदमेंप्रसन्नरहे
६से १०लौ	कुमार	विद्यामेंसीखनेमेंचित्तराखे
१०से १५लौ	किशोर	पोषाककीसजावटशरीरकोबना वटमेंमनधरे
१६से २५तक	पोगंड	स्त्रीयनकीसंगानकोमनमेंचाहे रेअच्छाखानापहरनाप्यारमेंम द्रव्यसंचयकरना
२६से ३५तक	नरुणी	देशोंकादेखनामनुष्योंअोरास्त्रि योंसेप्रीतकाबढ़ानाचाकरीत्र च्छीकरनीअोरईश्वरकेध्यानमें मनलगानायेनरुणकीप्रकृतीहै

३५ से उपरान्त	बद्ध	धर्मकाबिचारपरमेश्वरकाभंजन डोंकीसंगतदातारपनऔरजोजो नुष्योंकाकरनाचाहियेसोकरे ॥
	स्त्रीस्त्रियोंकावर्णन	
लंब	लक्षण	
१	मनुष्योंमेंभीड़मेंधसजाय	
२	अपनेपुरुषकेसंगुकेसंगधीनरावे	
३	हाथोंकीअंगुलियोंकोबार२चटकावे	
४	चालमेंनखरा २वावे	
५	पुरुषघरमेंनहोयतबसिंगारकरे	
६	अपनेघरसेचलकेपड़ोसीकेघरजावैठे	
७	घरकेद्वारपरबैठकेआनेजानेंकोदेखे	
८	बारबार घरकीछतपैजावैठे इधर उधरझांका झंकीकरतीरहे ॥	

इनलक्षणोंसेखोटीस्त्रीसमझनीचाहिये ॥

जोस्त्रीअपनेंपुरुषकेसंगप्यारप्रीतनहिंएवेउस
केकुलक्षणोंकावर्णन ॥

सूत्र	पु लक्षण
१	पुरुषकीसेजपेबैठनेसोसोजाय
२	नबपुरुषकेपासएकसेजपुसोवनोसोजा यपीठदेकेसोवेऔरकदाचिनपुरुषचैब न करैतोउत्तरन्तकपडासेमुहपूछडाल॥
३	अपनेंपुरुषकाकोईप्यारायारघरमेंआ वेतोउसकोबैरीकेतुल्यसमझे
४	पुरुषकीआज्ञानहिंमानेऔरविषयभो गकेसमयमनमेलाकरकेरसमेंविषघोले
५	गरुकाजमेंमननहिंलगावेऔरचापके घरजानेकापैगामकरतीरहे॥

बुद्धिमानपुरुषएसेकुलक्षणोंसेस्त्रीकोत्या गनेकीपहिचानकरलेवे ॥

निनस्त्रियोंकेमनमेंपुरुषकीप्रीतश्रा
नंदायकहोयउनकेशुभलक्षणोंक
॥ वर्णन ॥
अपनेंपुरुषकेसंगहंस२मीठी२बोनेंकरे
औरअपनेंअंगकीशोभाबार२दिखाकेअ
पनेंपुरुषकेमनकोप्रफुल्लितकरेहावभाव
करकेकभीअपनेंमुखपेघूंघटकीछ
बिदिखावेकभीघूंघटकोउलटकेचंद्रसेव
दनकीशोभादिखावेगहनापहरनेंकेबहाने
सेकभीउठकरबड़ीहोयपुरुषकीओरसभ
गीश्रांखनसोंदेखेऔरजबपुरुषकीनिगाह
अपनीतरफदेखेनबजुल्फोंकेबालोंकोस
भी [illegible] ऐसीभांतिकपोलपर

लटकावे कि देखने वाले अपने पुरुष का मन
उसी में जा फसे और जब पुरुष उसकी ओर दे
खे तब पग की उंगली से धरनी खोदे अर्थात्
लज्या से ऊंची दृष्टी नं करे और काम किला
ले समय मधुर वाणी से कुछ फरमाय श
करे और भोग के काम से निश्चन्त होके तुर
न सेज के ऊपर से नं उठे और पुरुष की अ
ज्ञा के अनुसार मन देकर काम करे। स्त्री के
ऐसे शुभ लक्षणों से पुरुष के मन में स्त्री का
प्यार समा जाता है ॥

कामवती स्त्री के लक्षण नीचे लिखे हैं

नंबर	लक्षण
१	स्त्री अपनी सेनोंकुचोंको पकड़के मले
२	नीचेले ओष्ठको दांतनसे काटे ॥
३	अंगड़ाई और जभाई बार बार लेवे
४	बराबर स्त्रीस्त्रियोंको बग़ल में दाबके कभी नीचे डालके कभी ऊपर छाती से लिपटाके और उनके पुरुष उनसे जिस प्रकार से मिलने हैं और कैसे २ प्यार करने हैं उनकी बात मनलगाके सुने ॥
५	बार बार अंगली चटकावे
६	घरके दरवाज़े पर आयकर पुरुषकी आनेकी रास्ता न करी रहै ॥
७	घरमें उदास मन रहै छाती खुली राखे ॥

ऐसे लक्षणोंसे जाना जाता है कि यह स्त्री कामवती है और विषयकी इच्छा करती है ॥